वह अवर्णनीय भेंट

फ्रैंकलीन द्वारा नोट्स

क्योंकि "परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया। यूहन्ना 3:16

जो प्रेम परमेश्वर हम से रखता है, वह इस से प्रगट हुआ कि परमेश्वर ने अपने एकलौते पुत्र को जगत में भेजा कि हम उसके द्वारा जीवन पाएं। 1 यूहन्ना 4:9

परमेश्वर का, उसके उस दान के लिए जो वर्णन से बाहर है, धन्यवाद हो। 2 कुरिन्थियों 9:15

यीशु मसीह का जन्म इस प्रकार से हुआ: मत्ती 1:18

लुका 1:26-38 - छठवें महीने में परमेश्वर की ओर से जिब्राईल स्वर्गदूत, गलील के नासरत नगर में, (27) एक कुँवारी के पास भेजा गया जिसकी मंगनी यूसुफ नामक दाऊद के घराने के एक पुरुष से हुई थी: उस कुवांरी का नाम मरियम था।

- छठवें महीने का अर्थ इलीशिबा के चमत्कारिक गर्भधारण के छठवे महीने से है जो यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले का था।

- जिब्राईल स्वर्गदूत (जिसका अर्थ "परमेश्वर का शूरवीर जन") को अक्सर परमेश्वर का संदेशवाहक भी कहते हैं। उसको दानिय्येल नबी के पास भेजा गया था (दानिय्येल 9:21; 8:16)। तथा इसे यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के पिता जकरयाह के पास बात करने भेजा, जब वह मन्दिर में सेवा कर रहा था (लूका 1:11-20), उसने उसे बताया कि मैं जिब्राईल हूँ, जो परमेश्वर के सामने खड़ा रहता हूँ (1:19)। यह अद्भुत, महान संदेशवाहक स्वर्गदूत निश्चय दिखने भययोग्य होगा।
    - दानिय्येल घबरा गया और मुंह के बल गिर पड़ा (दानिय्येल 8:17)
    - जब जकरयाह ने जिब्राईल को देखा तो उस पर भय छा गया (लूका 1:12)

- गलील के नासरत नगर में, जो एक छोटा सा, उपेक्षित, पहाड़ी नगर है।

- जिसकी मंगनी यूसुफ नामक दाऊद के घराने के एक पुरुष से हुई थी (मत्ती 1:17)
    - यहुदियों की सगाई हमारी सगाई से ज्यादा पक्की और शादी से पहले एक साल तक स्थायी होती है ।
    - यह 2 शमूएल 7:16-17 की भविष्यवाणी को पूरा करता है: तेरा घराना और तेरा राज्य मेरे सामने सदा अटल बना रहेगा; तेरी गद्दी सदेव बनी रहेगी। (17) इन सब बातों और इस दर्शन के अनुसार नातान ने दाऊद को समझा दिया।

- उस कुंवारी का नाम मरियम था।
    - उस समय के प्रथा अनुसार, मरियम एक जवान किशोरी थी ।
    - यशायाह 7:14 की उस भविष्यवाणी का पूर्ण होना : इस कारण प्रभु आप ही तुम को चिन्ह देगा। सुनो, एक कुंवारी गर्भवती होगी और पुत्र जनेगी, और उसका नाम इम्मानुएल रखेगी ।
    - यह इस बात की घोषणा करता है कि यह चमत्कारिक जन्म होगा क्योंकि किसी भी कुंवारी को बिना पुरुष बच्चा नहीं हो सकता।
    - और यह भी घोषित करता है कि मरियम के नैतिक चरित्र ने उसे परमेश्वर के मिशन के लिए योग्य ठहरया। हमारा नैतिक चरित्र और हम किस तरह जीवन बिताते हैं हमें विशेष सेवकाई के योग्य और अयोग्य ठहरा सकता है।
    - 1 कुरिन्थियों 24-27 ....मै अपनी देह को मरता कुटता और वश में लाता हूँ, ऐसा न हो... मै आप ही किसी रीति से निकम्मा ठहरूं।
    - 2 तीमुथियुस 2:19-21 यदि कोई अपने आप को इनसे शुद्ध करेगा ,तो वह आदर का बर्तन और पवित्र ठहरेगा; और स्वामी के काम आएगा, और हर भले काम के लिए तैयार होगा।

(28) और स्वर्गदूत ने उसके पास भीतर आ कर कहा: आनंद और जय तेरी हो, जिस पर ईश्वर का अनुग्रह हुआ है। प्रभु तेरे साथ है।

- परमेश्वर के पुत्र मसीह की माँ चुने जाने के कारण वह यकीनन बहुत अनुग्रहित थी।
- 'प्रभु परमेश्वर तेरे साथ है', ये वही वचन हैं जो परमेश्वर के दूत ने गिदोन से जो अपने पिता के घराने में सबसे छोटा था, बोले थे। यदि परमेश्वर तेरे साथ है तो सब कुछ सम्भव है।
    - वह आपके भी साथ है और कहता है: मैं तुझे कभी न छोड़ूंगा, और न कभी तुझे त्यागूँगा। इब्रानियों 13:5

(29) परन्तु वह उस वचन से **बहुत घबरा** गई, और सोचने लगी, कि यह किस प्रकार का अभिवादन है?

- इस शब्द का अर्थ "बहुत परेशान हो गई।" इसका उचित कारण हो सकता है, स्वर्गदूत को देखना और यह सोचना कि वह उसके पास किस कारण से आया होगा।

(30) स्वर्गदूत ने उससे कहा, हे मरियम; भयभीत न हो, क्योंकि परमेश्वर का अनुग्रह तुझ पर हुआ है।

- एक बार फिर मरियम के चरित्र ने उसे परमेश्वर की दृष्टि में ऊंचे स्थान पर खड़ा किया।
- आप अपने जीवन के लिए जो सबसे महत्वपूर्ण कार्य कर सकते हैं, वो परमेश्वर की दृष्टि में अनुग्रह प्राप्त करना है।

> यूहन्ना 8:29 यीशु ने कहा: मेरा भेजने वाला मेरे साथ है; उसने मुझे अकेला नहीं छोड़ा, क्योंकि मैं सर्वदा वही काम करता हूँ जिस से वह प्रसन्न होता है।
>
> इफिसियों 5:6-10 इसलिए तुम उनके सहभागी न हो; (8) क्योंकि तुम तो पहले अंधकार में थे परन्तु अब प्रभु में ज्योति हो, सो ज्योति की संतान के सामान चलो। (9) क्योंकि ज्योति का फल सब प्रकार की भलाई, और धार्मिकता और सत्य है। (10) और यह परखो कि प्रभु को क्या भाता है?
>
> कुलुस्सियों 1:9-12 ... प्रार्थना ... कि तुम सारे आत्मिक ज्ञान और समझ सहित परमेश्वर की इच्छा की पहचान में परिपूर्ण हो जाओ (10) ताकि तुम्हारा चाल-चलन प्रभु के योग्य हो, और सब प्रकार से प्रसन्न हो, और तुममें सब प्रकार के भले कामों का फल लगे, और तुम परमेश्वर के ज्ञान में बढ़ते जाओ।

- कुछ अनुवाद इसमें "तू स्त्रियों में धन्य है!" जोड़ देते हैं, जो मूल यूनानी का अनुवाद नहीं है।

(31) और देख, तू गर्भवती होगी और तेरे एक पुत्र उत्पन्न होगा; तू उसका नाम यीशु रखना।

- अब वह पूरी तरह से असमंजस्य की स्थिति में है, क्योंकि उसका विवाह नहीं हुआ।
- उसे बताया गया, कि उसके पुत्र का नाम क्या होगा।
- उसके स्वर्गीय पिता ने उसका नाम रखा।

(32) "वह महान होगा और परमप्रधान का पुत्र कहलाएगा; और प्रभु परमेश्वर उसके पिता दाऊद का सिंहासन उस को देगा; (33) वह याकूब के घराने पर सदा राज्य करेगा, और उसके राज्य का अन्त न होगा।"

- परमप्रधान का पुत्र, परमेश्वर ने इब्राहीम को सबसे पहले परमप्रधान परमेश्वर के रूप में प्रकट किया (एल-एल्योन, उत्पत्ति 14:18-22)। इस नाम का प्रयोग पवित्र शास्त्र में अनेक बार किया गया है (भजन संहिता 7:17; 18:13; 50:14; 57:2; 83:18; लूका 1:17; 2:14; 6:35; 8:28; प्रेरितों के काम 7:48; 16:17; इब्रानियों 7:1)।

- "का पुत्र" से अर्थ स्वाभाविक या जायज़ संतान से है जैसा यूहन्ना 1:14 में उल्लेख है "पिता का एकलौता पुत्र"।

- यशायाह 9:6-7 : भविष्यवाणी का पूर्ण होना

> क्योंकि हमारे लिए एक बालक उत्पन्न हुआ, हमें एक पुत्र दिया गया है;
>
> - जन्म पर "बालक" का आरम्भ होता है। परन्तु "एक पुत्र दिया गया" इस बात की घोषणा करता है कि पुत्र पहले से ही अस्तित्व में है।
>
> और प्रभुता उसके कंधे पर होगी, और उसका नाम अदभुत युक्ति करने वाला पराक्रमी परमेश्वर, अनंतकाल का पिता और शान्ति का राजकुमार रखा जाएगा। (7) उसकी प्रभुता सर्वदा बढ़ती रहेगी, और उसकी शान्ति का अंत ना होगा, इसलिए वह उसको दाऊद की राजगद्दी पर इस समय से लेकर सर्वदा के लिए न्याय और धर्म के द्वारा स्थिर किए और संभाले रहेगा। सेनाओं के यहोवा की धुन के द्वारा यह हो जाएगा।

- वह उत्तराधिकार में पिता दाऊद की राजगद्दी पाएगा, और वह याकूब के घराने पर सर्वदा तक राज्य करेगा, अर्थात वह यहूदियों का प्रतीक्षित राजा होगा, यहूदियों का मसीहा, "दाऊद की सन्तान", जो परमेश्वर के राज्य पर राज करेगा।

  और "**उसके राज्य का अन्त न होगा**"। उसका राज केवल जीवनकाल का नहीं परन्तु सदा सर्वदा का है। परमेश्वर द्वारा दाऊद को की गई मूल प्रतिज्ञा का पूर्ण करना। "तेरा घराना और तेरा राज्य मेरे सामने सदा अटल बना रहेगा; तेरी गद्दी सदैव बनी रहेगी।" (2 शमूएल 7:16)

(34) मरियम ने स्वर्गदूत से कहा, यह क्योंकर होगा? मैं तो पुरुष को जानती ही नहीं।

- मरियम असमंजस्य में थी परन्तु वह अविश्वास नहीं कर रही थी, तथा उसने उचित और स्पष्टता के लिए प्रशन पूछा। बच्चे के गर्भधारण के लिए पुरुष और स्त्री की ही आवश्यकता होती है।
- स्पष्टता के लिए प्रशन से पूछना अच्छा है, ताकि हम परमेश्वर का वचन पूरा होने में अपने अनुमान न लगा लें।

(35) स्वर्गदूत ने उस को उत्तर दिया, "पवित्र आत्मा तुझ पर उतरेगा, और परमप्रधान की सामर्थ तुझ पर छाया करेगी इसलिए वह पवित्र जो उत्पन्न होने वाला है, परमेश्वर का पुत्र कहलाएगा।

- उसके प्रशन का उत्तर देते हुए, तुम इस प्रकार मरियम को जानोगे, बिना पुरुष के गर्भवती।

- जब पवित्र आत्मा तुझ पर उतरेगा, तब परमप्रधान की सामर्थ उसकी इच्छानुसार सब कुछ लेकर आएगा - नया जन्म, नई सृष्टि, चंगाई, नई आँखें, नए अंग, भविष्यवाणी, नई भाषा, ... वह सब कुछ जिसकी वह इच्छा रखता है।

- कुंवारी से जन्म होने का सबसे पहला प्रकटीकरण **उत्पत्ति 3:15** में मिलता है जब परमेश्वर वाटिका में सर्प से बात करता है।

  - और मैं तेरे और इस स्त्री के बीच में, और **तेरे वंश** और **इसके वंश** के बीच में बैर उत्पन्न करूँगा; वह तेरे सिर को कुचल डालेगा, और तू उसकी एड़ी को डसेगा।

  - स्त्री का "वंश" अथवा बीज नहीं होता। बीज पुरुष से है और इस कारण परमेश्वर यह घोषणा कर रहा है कि इस पुरुष - यीशु मसीह - के **जन्म में पुरुष शामिल नहीं है**। अत: **वह एक पवित्र बालक** है।

  - यह बहुत आवश्यक है क्योंकि यदि वह पुरुष के बीज से उत्पन्न होता तो वह भी पापी स्वभाव पाता, जिस प्रकार हम सब ने पाया है।

    रोमियों 5:12 इसलिए जैसा **एक मनुष्य** के द्वारा पाप जगत में आया, और **पाप** के द्वारा मृत्यु आई, और इस रीति से **मृत्यु सब मनुष्यों में फैल गई**, क्योंकि सब ने पाप किया।

  - आदम में पाप था और वह पाप उन सब में जो उससे, उसके बाद, भौतिक पिता के द्वारा उत्पन्न हुए, फैल गया। यीशु मसीह के साथ ऐसा नहीं था। आदम उसका पिता नहीं था। उसका पिता सर्वशक्तिमान, पवित्र जन था और इसलिए उसका पुत्र पवित्र है।

  - अत: प्रभु यीशु मसीह के पास "पापी स्वभाव" **नहीं** है। यह केवल उसी को इस योग्य ठहरता है कि वह परमेश्वर का मेमना हो, जो जगत के पाप उठा ले जाता है (यूहन्ना 1:29)। जिस प्रकार उन्हें फसह के मेमने की शिक्षा दी जाती थी: तुम्हारा मेमना **निर्दोष** नर हो।

    तथा :

    2 कुरन्थियों 5:21 जो **पाप से अज्ञात** था उसी को उसने हमारे लिए पाप ठहराया ...
    इब्रानियों 4:15 परखा तो गया ... तौभी **निष्पाप** निकला
    1 पतरस 2:22 **न** तो उसने **पाप** किया
    1 यूहन्ना 3:5 और उसके स्वभाव में **पाप नहीं**

    - यीशु मसीह **परमेश्वर का पुत्र है**, **ईश्वरीय**
    - स्त्री से जन्मा, पुरुष, और इस कारण **मनुष्य**।
    - हमारे लिए एक बालक उत्पन्न हुआ, हमें एक पुत्र दिया गया है (यशायाह 9:6)।

देह धारण का भेद - परमेश्वर मनुष्य बना

- और वह परमेश्वर का पुत्र कहलाएगा, यह इस बात को स्पष्ट करता है कि इस पवित्र बालक का **पिता** कौन है, और साथ ही **यीशु मसीह** का **कुंवारी से** चमत्कारिक जन्म को भी स्पष्टता से बताता है।

  इसमें संदेह नहीं कि भक्ति का भेद गंभीर है। 1 तीमुथियुस 3:16

इस पर ध्यान दें:
यूहन्ना 3:35 & 5:20 पिता पुत्र से प्रेम रखता है ...

- अपने पुत्र के प्रति पिता के प्रेम का क्या स्तर है? यह हमारी समझ से परे है !

यूहन्ना 3:16 क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया ...

- यह जानते हुए कि वह अपने पुत्र से कितना प्रेम रखता है .... वह इस संसार में अपने लोगों से कितना अधिक प्रेम रखता है????
- संकेत - जिस दाम पर कोई खरीदने के लिए तैयार हो जाता है उससे उसका मूल्य निर्धारित किया जाता है।
- अत: ..... आप बहुत अधिक मूल्यवान हैं !!!

---

(36) और देख, और तेरी कुटुम्बिनी इलीशिबा के भी **बुढ़ापे में** पुत्र होने वाला है, यह उसका, जो बाँझ कहलाती थी छठवां महीना है।

- मरियम जवान थी और इलीशिबा बूढ़ी। जवान और बुजुर्ग दोनों को यह जानना और पहचानना चाहिए कि वे दोनों परमेश्वर की सेवा के लिए एक समान योग्य और कृपा प्राप्त हैं।

- यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले का भी जन्म विशेष था। इलीशिबा तब तक बाँझ रही जब तक परमेश्वर ने ज़कर्याह से बालक को होने दिया/अनुमति दी।

- परमेश्वर किसी भी मनुष्य के जीवन में हस्तक्षेप कर सकता है ताकि वह अपने उद्देश्य, अपनी इच्छा, अभिप्राय को पूरा करे।

- हमें यह ध्यान रखना है कि ज़कर्याह और इलीशिबा दोनों परमेश्वर के सामने धर्मी थे, और प्रभु की सारी आज्ञाओं और विधियों पर **निर्दोष** चलने वाले थे। लूका 1:6

  हमें इसी तरह जीना चाहिए। देखें 2 तीमुथियुस 2:21

(37) **क्योंकि परमेश्वर के साथ कुछ भी असम्भव नहीं है।**

- यह बहुत बड़ी सान्तवना, प्रोत्साहन और विश्वास का निर्माता है। जब हम उसकी सारी सृष्टि और जो कुछ वह अस्तित्व में लाया, उन बातों पर विचारते हैं तो यह हमारे लिए अचम्भित होने की बात नहीं है। वह यकीनन सर्व-सामर्थी है, और सब कुछ कर सकता है।

(38) मरियम ने कहा, देख, मैं प्रभु की **दासी** हूँ, **मुझे तेरे वचन के अनुसार हो**: तब स्वर्गदूत उसके पास से चला गया।

यह जानकर कि वह विवाह से बाहर गर्भ से है एक किशोरी के लिए अपने परिवार, अपने मंगेतर, और अपने गाँव के द्वारा गलत समझा और तिरस्कार का सामना करना, तथा यह कि इसका संभवत: परिणाम पत्थरवाह भी हो सकता है (व्यवस्थाविवरण 22:22-24)। और फिर भी **बिना किसी संकोच के वह सहमत हो गई**।

यहाँ **महान विश्वास, सम्पूर्ण भरोसा** और अपने जीवन के लिए परमेश्वर की इच्छा के प्रति **पूर्ण वचनबद्धता** है। हमारी प्रेरणा और लक्ष्य का एक उच्च निशान।

मरियम अपने जीवन के ऊपर परमेश्वर के प्रभुत्व के सच्चे अर्थ को प्रकट करती है: मैं प्रभु की दासी हूँ , जो यूनानी शब्द δουλος (हिन्दी - डुलोस) का अनुवाद है।

दास और सेवक के बीच अंतर है।

- सेवक जिसकी सेवा करते हैं वे उनके स्वामी नहीं होते
- दास के मालिक उनके स्वामी होते हैं।

यूनानी शब्द इस अंतर को बहुत स्पष्टता से बताते हैं।
सेवक के लिए यूनानी शब्द: παιδος और διακονος सेवक या डिकन । दास के लिए यूनानी शब्द δουλος है।
यहाँ एक बहुत अच्छा सबक है कि हम सावधानी पूर्वक इन शब्दों का अनुवाद करें ।

दास (δουλος) शब्द व्यवस्थाविवरण 15:12-17 की ओर संकेत करता है।
"यदि तेरा कोई भाई बंधू, अर्थात कोई इब्री या इब्रिन, तेरे हाथ बिके और वह छ: वर्ष तेरी सेवा कर चुके, तो सातवें वर्ष उसको अपने पास से स्वतन्त्र करके जाने देना ... (16) यदि वह तुझ से और तेरे घराने से प्रेम रखता, और तेरे संग आनन्द से रहता हो, और इस कारण तुझ से कहने लगे, 'मैं तेरे पास से न जाऊँगा' (17) तो सुतारी लेकर उसका कान किवाड़ पर लगा कर छेदना, तब वह सदा तेरा दास बना रहेगा। और अपनी दासी से भी ऐसा ही करना।

यही मरियम प्रभु से कहती है। देख, मैं प्रभु की दासी हूँ, मुझे तेरे वचन के अनुसार हो।
जिस शब्द का उपयोग मरियम करती है वह 'डुलोस' का स्त्रीलिंग है - **दास स्त्री**

वह अपना जीवन उसकी इच्छा के प्रति सौंप रही है, जो "तेरा राज्य आए, तेरी इच्छा जैसी स्वर्ग में पूरी होती है वैसे पृथ्वी पर भी हो (मत्ती 6:10; ; लूका 11:2)। वास्तव में इस प्रार्थना को करने का अर्थ, स्वयं को परमेश्वर के सेवक नहीं अपितु दास के रूप में सौंपना है।

यह है परमेश्वर के प्रति, अपनी इच्छा, अपनी चाहत, अपनी आवश्यकताओं, अपनी इच्छाओं की चिन्ता न करते हुए, चाहे कठिन हो या सरल, यहाँ तक कि मृत्यु तक **पूर्ण समर्पण।**

विभिन्न स्तर के अर्थ और वचनबद्धता के साथ **हम सब** "**प्रभु**" शब्द का इस्तेमाल करते हैं। लूका 6:46 इसको उजागर करता है: जब तुम मेरा कहना नहीं मानते तो क्यों मुझे हे प्रभु , हे प्रभु कहते हो?

मरियम कह रही थी: "मेरे लज्जित होने या दुःख उठाने के बावजूद, हाँ प्रभु"। यदि मैं ना कहूँ या जान बूझ कर आज्ञा न मानूं, तो वह मेरा प्रभु नहीं है। वह मेरे सच्चे विश्वास के द्वारा मेरा उद्धारकर्ता तब भी हो सकता है, परन्तु आज्ञाकारिता द्वारा मेरा प्रभु नहीं।

हमें यह निर्णय करना है: क्या मेरी निष्ठा प्रभु की ओर है या मेरी अपनी इच्छाओं की ओर? क्या मैं उसका सेवक हूँ और कभी भी "ना" कह सकता हूँ? **या फिर - क्या अपने जीवन काल के लिए मैं उसका बन्दी दास हूँ?**

कई बार समर्पण के बिन्दु पर आने के लिए हमारी आत्मा में बड़ी हलचल होती है, परन्तु उस पर आना आवश्य है। **यीशु के गर्भ-धारण से पहले, मरियम को इस निर्णय का सामना करना पड़ा: क्या मैं आज्ञा मानूं और इस राजा के लिए मार्ग बनाऊँ? या फिर मैं आसान मार्ग लूँ जिससे कठिनाई और दर्द से बच सकूँ?**

उसका अनन्त श्रेय - मरियम का विश्वासपूर्ण प्रतिउत्तर ही हमारा प्रतिउत्तर होना चाहिए : "मैं परमेश्वर का बन्दी दास हूँ। जैसा तू ने कहा वैसा ही मेरे लिए हो"।

पूर्ण समर्पण और आज्ञाकारिता का स्वाभाव परिवार में है।

इस पर विचार करें : फिलिप्पियों 2:5-11 जैसा मसीह यीशु का स्वभाव था वैसा ही तुम्हारा भी स्वभाव हो, (६) जिसने परमेश्वर के स्वरूप में हो कर भी परमेश्वर के तुल्य होने को अपने वश में रखने (या थामे रखने) की वस्तु न समझा। (७) वरन अपने आप को ऐसा शून्य कर दिया

- "परमेश्वर के स्वरूप" और "परमेश्वर के तुल्य" होना उसके ईश्वरीयता की घोषणा करता है।
- शून्य कर दिया, नीचे गिरा दिया, दीन कर दिया
- अपने पद, अपने सिंहासन, अपनी महिमा को त्याग दिया, जो ईश्वरीयता का परमाधिकार है। परन्तु उसने अपनी ईश्वरीयता को नहीं त्यागा, जो वह था।
- परमेश्वर आप से यह नहीं चाहता कि आप जो हैं उसे त्याग दें परन्तु यह कि आप स्वयं को शून्य करने और उसकी आज्ञा मानने के द्वारा वह हो जाएँ जिसके लिए आप सृजे गए हैं।
- यह आदर्श है कि किस प्रकार हमें परमेश्वर के राज्य में रहना है।दूसरों की सेवा और आदर करने के लिए अपने आपको शून्य करना

दास का स्वरूप धारण किया (यूनानी - δουλος अर्थात दास)

- यही शब्द जो मरियम ने इस्तेमाल किया था।

और मनुष्य की समानता में हो गया।

- स्वर्ग से नीचे, पृथ्वी पर, परमेश्वर के स्वरूप से मनुष्य की समानता में ... कितना सीमित .... कितना दीन ।
- हम में से एक हो गया। एक मिशनरी होने का उदाहरण (1 कुरिन्थियों 9:19-22)

(8) और मनुष्य के रूप में प्रकट हो कर अपने आप को दीन किया और यहाँ तक आज्ञाकारी रहा कि मृत्यु, हाँ, क्रूस की मृत्यु भी सह ली।

- क्रूस मानवता के लिए सबसे बुरा था
- वह जो पवित्र था आपके और मेरे लिए पाप बनने को तैयार हो गया।
- वह जो जीवन था मरने को तैयार हो गया ... कि शैतान, पाप, और मृत्यु की शक्ति के आधीनता में आ जाए। और हम ने उसे तीन बार पुकारते सुना: हे मेरे पिता, यदि हो सके तो यह कटोरा मुझ से टल जाए; तौभी जैसा मैं चाहता हूँ वैसा नहीं, परन्तु जैसा तू चाहता है वैसा ही हो। (मत्ती 26:39) बंधुवे दास का सम्पूर्ण समर्पण।

(9) **इस कारण** परमेश्वर ने **उसको अति महान भी किया**,

- परन्तु जो कोई तुम में बड़ा होना चाहे, वह तुम्हारा सेवक (διακονος) बने; (27) और जो तुम में प्रधान होना चाहे, वह तुम्हारा दास (δουλος) बने; (28) जैसे कि मनुष्य का पुत्र; वह इसलिए नहीं आया कि उसकी सेवा टहल की जाए, परन्तु इसलिए आया कि आप सेवा टहल करे, और बहुतों को छुड़ाने के लिए अपने प्राण दे"। मत्ती 20:26-28

और उसको वह नाम दिया जो सब नामों में श्रेष्ठ है, (10) कि जो स्वर्ग में और पृथ्वी पर और पृथ्वी के नीचे हैं, वे सब यीशु के नाम पर घुटना टेकें; (11) और परमेश्वर पिता की महिमा के लिए हर एक जीभ अंगीकार कर ले कि यीशु मसीह ही प्रभु है।

फिलिप्पियों का यह भाग भविष्यवक्ता **यशायाह 50:5-7** के शब्दों को पूर्ण करता है।

प्रभु यहोवा ने मेरा कान खोला (दास के कान छेदा) है, और मैने विरोध न किया, न पीछे हटा (6) मैने मारने वालों को अपनी पीठ और गलमोछ नोचने वालों की ओर अपने गाल किए; अपमानित होने और उनके थूकने से मैंने मुंह न छिपाया (मत्ती 15:15-21)। (7) क्योंकि प्रभु यहोवा मेरी सहायता करता है, इस कारण मैने संकोच नहीं किया; वरन अपना माथा चकमक के समान कड़ा किया (लूका 9:51) क्योंकि मुझे निश्चय था कि मुझे लज्जित होना न पड़ेगा।

- संकोच ? लज्जित? वह किसके लिए चिन्तित है? लोगों के लिए? या अपने पिता के लिए?
- हम किसको प्रसन्न करने की चिन्ता करते हैं??? अपने मित्रों को? या प्रभु को?

परमेश्वर का, उसके उस दान के लिए जो वर्णन से बाहर है, धन्यवाद हो। 2 कुरिन्थियों 9:15

क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलोता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नष्ट न हो,परन्तु अनन्त जीवन पाए। यूहन्ना 3:16

परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह का दान और देना लगातार जारी है।

जितनों ने उसे ग्रहण किया (वह दान), उसने उन्हें परमेश्वर की सन्तान होने का अधिकार दिया। यूहन्ना 1:12

क्योकि हर एक अच्छा वरदान और हर एक उतम दान ऊपर ही से आता है। याकूब 1:17

उसके पुत्र का दान - पवित्र आत्मा का दान - आत्मा का दान - अनुग्रह, दया, क्षमा, शान्ति ... का दान - अपनी हर एक सांस और अपने हृदय की हर एक धड़कन का दान - वह सब जो हमारे पास है - जो कुछ भी हम हैं - हमारे स्वर्गीय पिता की ओर से हमारे लिए दान हैं।

- तथा -

हम सब को आज्ञा दी गई है कि हम अपने स्वर्गीय पिता और हमारे प्रभु यीशु मसीह के अनुग्रह और दानों के देने वाले हों ।

यीशु ने कहा है : “लेने से देना धन्य है। प्रेरितों के काम 20:35

दिया करो, तो तुम्हें भी दिया जाएगा। लोग पूरा नाप दबा दबाकर और हिला हिलाकर और उभरता हुआ तुम्हारी गोद में डालेंगे, क्योंकि जिस नाप से तुम नापते हो, उसी से तुम्हारे लिए भी नापा जाएगा।” लूका 6:38

यही क्रिसमस है। यही जीवन है।

उसका वर्णन से बाहर दान

मत्ती रचित सुसमाचार, यीशु के जन्म को उसके संसारिक पिता, युसूफ के दृष्टिकोण से देखती है। तथा वह **इब्राहीम से दाऊद**, इस्राएल के महान राजाओं, से आरम्भ हो कर वंशावली का अन्त करती है : याकूब से यूसुफ उत्पन्न हुआ, जो मरियम का पति था, और मरियम से यीशु जो मसीह कहलाता है, उत्पन्न हुआ। (मत्ती 1:16)

दाऊद की वंशावली से यीशु का आना, उसे परम प्रधान राजा होने की श्रेणी में ले आता है, वह मसीहा, वह अभिषिक्त जन, दाऊद के सिंहासन का उत्तराधिकारी, जो परमेश्वर के राज्य पर सदा के लिए राज करेगा।

मत्ती आरम्भ करता है (1:18) : यीशु मसीह का जन्म इस प्रकार से हुआ, कि जब उसकी माता मरियम की मंगनी यूसुफ के साथ हुई, तो उसके इकट्ठा होने से पहले ही वह पवित्र आत्मा की ओर से गर्भवती पाई गई।

इसमें तथ्य जो बताए गए हैं:

1. मरियम और युसूफ की सगाई हो गई थी।
2. वे दोनों “एक साथ” नहीं आए थे, मरियम अब तक कुंवारी थी।
3. परन्तु मरियम से यह प्रदर्शित होने लगा कि वह गर्भवती है
4. उसका गर्भ-धारण मनुष्य द्वारा नहीं, पवित्र आत्मा से था। हालाँकि युसूफ को पता नहीं चला था।

युसूफ को अपनी मंगेतर के गर्भधारण का सामना करना पड़ा। नाजरत एक छोटा सा शहर था, और लोग बातें बना रहे थे, “मरियम गर्भवती” है।

मेरे विचार से यूसुफ बहुत लज्जित और बहुत परेशान था। **केवल वही जानता था कि वह उसका पिता नहीं है।** वह समझ रहा था कि उसकी मंगेतर मरियम का कहीं प्रेम-प्रसंग है, और उसने बेवफ़ाई की है, और यह कि उसकी मंगनी व्यभिचारणी से हुई है।

मरियम के गर्भ धारण ने इस समाज में उसे बहुत खतरे में डाला था:

1. उसका मंगेतर उसे त्याग सकता था। उसका गर्भवती होना उसके मंगेतर को लज्जित करके उसके चरित्र को प्रतिबिम्बित करता। वह उससे यह अपेक्षा नहीं कर सकती थी कि वह उसे समझेगा या उसकी स्थिति को स्वीकार करेगा।
2. बदतर स्थिति में उस पर पत्थरवाह किया जा सकता था। इस दशा में व्यवस्था द्वारा पत्थरवाह का दण्ड संभव था (व्यवस्थाविवरण 22:13-30)। व्यभिचार के लिए पत्थरवाह प्रथम शताब्दी इस्राएल में अभी तक प्रचलित थी।
3. भली स्थिति में, उसका परिवार उस से घर में ही रहने को कहता, हालांकि उसका व्यभिचार माने जाने के कारण समाज में उसके परिवार के मान को चोट पहुँचती। उसे और उसके बच्चे को दूर रखा जाता।

4. कोई भी सम्मानित व्यक्ति उससे विवाह नहीं करता क्योंकि उसके व्यभिचारी समझे जाने का कलंक उसके साथ बना रहता और उसके पति की प्रतिष्ठा को भी दूषित करता।
5. वह शहर जा कर भीड़ में नहीं खो सकती थी। अकेली स्त्री अकेले नहीं रह सकती थी। यह परिवार केन्द्रित संस्कृति थी जहाँ स्त्रियों का कार्य-क्षेत्र घर और परिवार में ही था।

मरियम का भविष्य आसान नहीं था। वह गर्भधारण के लिए तैयार हो गई। उसने स्वर्गदूत से कहा" ,देखमैं प्रभु , लूका) "मुझे तेरे वचन के अनुसार हो। ,की दासी हूँ1:38 ,(परन्तु अब इस निर्णय का मुल्य दुखद बन गया था। तथापि परमेश्वर का अनुग्रह अब गति में आया। ,

मत्ती 1:19 उसके पति यूसुफ ने जो धर्मी था और उसे बदनाम नहीं करना चाहता था उसे चुपके से त्याग :अत" "देने का विचार किया।

- उसका पति - यह इसलिए कहा गया क्योंकि "मंगनी" एक वैध वचनबद्धता थी, और यह बंधन हमारी आज की "मंगनी" से कहीं अधिक बढकर थे। यह स्पष्ट रीति से बताया गया है कि : **उनके इकट्ठा होने से पहले** ही वह पवित्र आत्मा की ओर से गर्भवती पाई गई।

- जो धर्मी था - यूसुफ का चरित्र। "धर्मी" का अर्थ है, जो व्यवस्था का सही-सही पालन करता है और उसने वही किया जो सही था। उस समय के रीति-रिवाजों के अनुसार, व्यभिचार उसे विवाह के लिए अयोग्य ठहरता था। परन्तु उसकी धार्मिकता प्रेम के द्वारा संचालित थी न कि **कट्टर कठोर नियमों** के द्वारा। वह **सम्मानित** था और जो सही था वही करना चाहता था।

- चुपके से त्यागना - एक गलत बात जिसका उसने निर्णय लिया वह यह था कि उसने मरियम के लिए व्यभिचार की सजा की मांग की। वह उससे विवाह नहीं करना चाहता था क्योंकि वह जानता था कि बच्चा उसका नहीं था। इसलिए उसने निर्णय लिया कि उसे चुपके से त्याग देगा। उसे व्यवस्थानुसार केवल त्यागने का एक पत्र दो गवाहों के सामने उसे देना था।

- हम यूसुफ की दया और परिपक्वता देखते हैं। वह अपनी चिन्ता या अपनी प्रतिष्ठा की रक्षा नहीं कर रहा था। यूसुफ वह व्यक्ति था जो दूसरों के लिए भला कार्य अपने मुल्य पर करने की सोच रखता था।

मत्ती 1:20-21 जब वह इन बातों के सोच ही में था तो प्रभु का स्वर्गदूत उसे स्वप्न में दिखाई देकर कहने लगा, "हे यूसुफ! दाऊद की सन्तान, तू अपनी पत्नी मरियम को अपने यहाँ ले आने से मत डर, क्योंकि जो उसके गर्भ में है, वह पवित्र आत्मा की ओर से है। (२१) वह पुत्र जनेगी और तू उसका नाम यीशु रखना, क्योंकि **वह अपने लोगों का उनके पापों से उद्धार करगा।**"

- दाऊद की सन्तान - यहाँ बात पर बल दिया कि यूसुफ दाऊद का सीधा वंशज है, जो इस्राएल का महानतम राजा, और जिसके वंश से मसीह को आना है।

- सन्देश यह है कि मरियम को अपनी बनाने से मत डर। स्वर्गदूत ने यूसुफ को आश्वासन दिया कि इस सम्बन्ध के साथ आगे बढ़ना सही और न्यायोचित है। उसका गर्भधारण व्यभिचार से नहीं परन्तु पवित्र आत्मा से है।

- तू उसका नाम यीशु रखना, क्योंकि वह अपने लोगों का उनके पापों से उद्धार करगा। यूसुफ को व्यक्तिगत रीति से बालक को नाम देने का आदेश दिया गया था। इसका अर्थ है कि, **यूसुफ बालक का नाम रखने में उसे अपने बालक के रूप में स्वीकार कर रहा है और इस प्रकार वह यहूदी व्यवस्था के अनुसार उस बालक का वैध पिता ठहरता है।** इस वैध लेपालक के परिणामस्वरूप, दाऊद का वंशज होने के नाते यूसुफ की वंशावली भी उसके वैध पुत्र को स्थानांतरित हो जाती है।

स्वाभाविक रीति से, यीशु पवित्र आत्मा के द्वारा जन्मे और इस कारण "**परमेश्वर के पुत्र**" हुए (लूका 1:32)।

वैध रीति से वह यूसुफ का पुत्र और यूसुफ के पूर्वज दाऊद को की गई प्रतिज्ञाओं का उत्तराधिकारी है।

यीशु मसीह "परमेश्वर का पुत्र" और **"मनुष्य का पुत्र"** दोनों है।

आरम्भ से ही यीशु का नाम उसके मिशन की ओर संकेत करता है।

ईसुस (यूनानी) यहोशुवा से आता है जिसका अर्थ:

(क) यहोवा - जिसका स्वयं अस्तित्व है, अनन्त है और
(ख) याशा का अर्थ है, सुरक्षा, बचाना, या उद्धार करना

मरियम और यूसुफ दोनो को स्वर्गदूत के द्वारा यह नाम दिया गया जो एक दूसरे को कड़ी पुष्टि देता है कि उनकी बातें और जो वे कर रहे है वो सही है और परमेश्वर की इच्छा में है।

मसीहा को उद्धारकर्ता के रूप में देखना उस समय की यहूदी समझ थी। परन्तु स्वर्गदूत ने यूसुफ को स्पष्ट रीति से बता दिया था कि **उद्धार राजनैतिक और सैन्य नहीं होगा**। यीशु का मिशन रोमी तानाशाह का तख्ता पलटना और यहूदी राज्य की स्थापना करना नहीं था जिस प्रकार फरीसियों के द्वारा अपेक्षित था। उसका मिशन अपने लोगों को उससे भी बड़े कपटी शत्रु - **पाप** - से बचाना था।

स्वर्गदूत का सन्देश पूर्ण था, मत्ती अब इन सब बातों को 800 ई.पू. यशायाह 7:14 में लिखे प्राचीन भविष्यवक्ता के वचन के द्वारा, समझाता है।

मत्ती 1:21-23 यह सब इसलिए हुआ कि जो वचन प्रभु ने भविष्यवक्ताओं के द्वारा कहा था, वह पूरा हो: (23) "देखो, एक कुंवारी गर्भवती होगी और एक पुत्र जनेगी, और उसका नाम इम्मानुएल रखा जाएगा", जिसका अर्थ है - परमेश्वर हमारे साथ।

> इम्मानुएल नाम यीशु पर लागू होता है, क्योंकि "परमेश्वर हमारे साथ" यीशु मसीह को वर्णित करने का सबसे सही तरीका है, इसलिए कि वह पूर्ण मनुष्य और पूर्ण परमेश्वर है।

मत्ती 1:24-25 तब यूसुफ नींद से जागकर प्रभु के दूत की आज्ञा के अनुसार अपनी पत्नी को अपने यहाँ ले आया (25) और जब तक वह पुत्र न जनी तब तक वह उसके पास न गया; और उसने उसका नाम यीशु रखा।

- जैसे ही यूसुफ जागा, उसने आज्ञा मानी। उसने मरियम को अपनी पत्नी स्वीकार किया।
- यीशु के जन्म के बाद मरियम और यूसुफ पति और पत्नी की तरह रहे तथा उनके और भी सन्तान हुई, जैसा लिखा है - जब तक वह पुत्र न जनी तब तक वह उसके पास न गया।
- **मत्ती 13:55-56** क्या यह बढ़ई का बेटा नही? और क्या इसकी माता का नाम मरियम और इस के भाइयों के नाम याकूब, यूसुफ, शमौन, और यहूदा नही? (56) और क्या इसकी सब बहनें हमारे बीच में नही रहती?

[कैथलिक मानना है कि ये यूसुफ की पहले विवाह की संतानें थी और मरियम अन्त तक कुंवारी रही।]

यूसुफ की मृत्यु के विषय में पवित्र वचन कुछ नहीं कहता, हालांकि यीशु के क्रूस पर चढ़ाए जाने के समय सम्भवत: वह जीवित नहीं था, अन्यथा यीशु को अपनी माता की देखभाल की जिम्मेवारी अपने प्रिय शिष्य यूहन्ना को देने की आवश्यकता नहीं होती (यूहना 19:26-27)।

हम अब शेष वृतान्त के लिए वापस लूका रचित सुसमाचार में लौट जाते हैं।

परमेश्वर के पुत्र, मसीह का जन्म

लूका 2 : उन दिनों में औगस्तुस कैसर की ओर से आज्ञा निकली कि सारे जगत के लोगो के नाम लिखे जाये। (2) यह पहली नाम लिखाई उस समय हुई , जब क्विरिनियुस सीरिया का हाकिम था।

- यीशु इतिहास का एक व्यक्ति है। उसका जिक्र न केवल नए नियम में, परन्तु समकालीन और प्राचीन लेखों में भी हुआ, जैसे, जोसफस, टकितुस, सुतोनियस, बार-सेरापियन, थालुस, लुसियन, और तालमुद।

(3) सब लोग नाम लिखवाने के लिए अपने अपने नगर को गए। (4) अत: यूसुफ भी इसलिए कि वह दाऊद के घराने और वंश का था। गलील के नासरत नगर से यहूदिया में दाऊद के नगर बेतलेहेम को गया । (5) कि अपनी मंगेतर मरियम के साथ जो गर्भवती थी नाम लिखवाए।

- यीशु का जन्म इस्राएल के महानतम राजा दाऊद के जन्म स्थान में हुआ था। करीब 1000 वर्ष पहले परमेश्वर ने शमूएल नबी के द्वारा दाऊद से प्रतिज्ञा की थी कि "तेरा घराना और तेरा राज्य मेरे सामने सदा अटल बना रहेगा; तेरी गद्दी सदेव बनी रहेगी।" (2 शमूएल 7:16)

- मीका ने भी करीब 800 वर्ष पहले भविष्यवाणी की : मीका 5:2 हे बेतलेहेम एप्राता, यदि तू ऐसा छोटा है कि यहूदा के हजारों में गिना नही जाता , तौभी तेरे में से मेरे लिए एक पुरष निकलेगा, जो इस्राएलियों में प्रभुता करने वाला होगा; और उसका निकलना प्राचीनकाल से, वरन अनादिकाल से आता आया है।

- **इतिहास का सबसे महिमामय क्षण अब होने को हैं,** परन्तु यूसुफ और मरियम के लिए यह कठिन यात्रा है। नाजरत नगर बेतलेहेम से उत्तरी दिशा में चार दिन की यात्रा पर स्थित है। मरियम नौ महीने गर्भ से है। यदि वह नाजरत में रहती तो उसे लोकनिंदा का अकेले सामना करना पड़ता।

- परमेश्वर की योजना का पालन करना सदा आसान नहीं होता। केवल इस कारण यह सोच लेना कि हम कठिनाई और बाधाओं का सामना इसलिए कर रहे है क्योंकि हम उसकी इच्छा से हट गए हैं, गलत है।

(6) उनके वहा रहते हुए उसके जनने के दिन पुरे हुए। (7) और वह अपना पहलौठा पुत्र जनी और उसे कपड़े में लपेटकर चरनी में रखा; क्योकि उनके लिए सराय में जगह न थी।

- बेतलेहेम में गणना होने के कारण सराय यात्रियों से भरी थीं।

- चरनी, जहाँ पशुओं को रखा जाता था, उसका पहला पालना पशुओं के खाने वाली नाली थी। सबसे नम्र और दीन आरम्भ।

- उसकी आज्ञा "कंगालों को सुसमाचार सुनाना" थी (लूका 4:18; यशायाह 61:1 का उल्लेख करते हुए) इसलिए उसने कंगालों से भी कंगालों के बीच में जन्म लिया।

- हमारी तरह उसके शिष्यों ने भी यह विवाद किया कि कौन बड़ा या महान है, परन्तु यीशु ने कहा : परन्तु जो कोई तुम में बड़ा होना चाहे, वह तुम्हारा **सेवक** बने; (27) और जो तुम में प्रधान होना चाहे, वह तुम्हारा **दास** बने; (28) जैसे कि मनुष्य का पुत्र; वह इसलिए नहीं आया कि उसकी सेवा टहल की जाए, परन्तु इसलिए आया कि आप सेवा टहल करे, और बहुतों की छुड़ाने के लिए अपने प्राण दे।" मत्ती 20:26-28

गड़ेरिये

(8) और उस देश में कितने गड़ेरिये थे, जो रात को मैदान में रहकर अपने झुण्ड का पहरा देते थे। (9) और प्रभु एक दूत आकर खड़ा हुआ, और प्रभु का तेज उनके चारों और चमका, और वे बहुत डर गए।

- स्वर्गदूतों ने सन्देश गड़ेरियों को सुनाया न कि बेतलेहेम के किसी प्रधान को (देखें : 1 कुरिन्थियों 1:26-29)
- चरवाहों के लिए? वह "परमेश्वर का मेमना" है (यूहन्ना 1:29, 36)
- बेतलेहेम के चारों ओर पलने वाली बहुत सी भेड़ों की मन्जिल यरूशलेम के मन्दिर में बलिदान की वेदी थी, जो वहाँ से केवल छह मील उत्तर में है।
- और वह "महान चरवाहा" है। (इब्रानियों 13:20)

(10) तब स्वर्गदूत ने उनसे कहा, "मत डरो; क्योकि देखो, मै तुम्हे बड़े आनंद का सुसमाचार सुनाता हूँ जो सब लोगो के लिए होगा, (11) कि आज दाऊद के नगर में तुम्हारे लिए एक उद्धारकर्ता जन्मा है,और यही मसीह प्रभु है।

- मनुष्य जाति के लिए सबसे महान और अदभुत सन्देश।
- सब लोगों के लिए - न केवल धर्मी, न केवल धार्मिक परन्तु हर एक के लिए, इनमें वो भी सम्मिलित है जो गरीब और शोषित हैं, जिन्हें परमेश्वर से अलग कर रखा है।
- तुम्हारे लिए - इस बालक ने केवल मरियम और यूसुफ के लिए ही जन्म नहीं लिया था। बालक ने "तुम्हारे लिए" - गड़ेरिये और हर एक जन के लिए - जन्म लिया।
- एक उद्धारकर्ता, जो प्रभु यीशु मसीह है - हम ने देख भी लिया और गवाही भी देते हैं कि पिता ने पुत्र को जगत का उद्धारकर्ता करके भेजा है। 1 यूहन्ना 4:14

(12) और इसका तुम्हारे लिए यह चिन्ह होगा कि तुम एक बालक को कपड़े में लिपता हुआ और चरनी पड़ा पाओगे।

- गिदोन ने "परमेश्वर के दूत" से तीन चिन्ह मांगे, और उसे दिए गए। (न्यायियों 6:17, 37, 39)
- जकर्याह ने जिब्राइल से चिन्ह माँगा, और उसे दिया गया। (लूका 1:18)
- मरियम को चिन्ह दिया गया, वह बिना पुरुष के गर्भवती थी।
- यीशु ने बहुत से चिन्ह और चमत्कार किये, जिससे यह प्रमाणित होता है कि वह कौन है।
- मैं इस बात से आश्वस्त हूँ कि उसने हम सभी को चिन्ह दिए हैं और हम उन्हें पहचानने से चूक गए हैं।

(13) तब एकाएक उस स्वर्गदूत के साथ स्वर्गदूतो का एक दल परमेश्वर कि स्तुति करते हुए और यह कहते दिखाई दिया, (14) "आकाश में परमेश्वर की महिमा और पृथ्वी पर उन मनुष्यों में जिनसे वह प्रसन्न है, शान्ति हो।"

- स्वर्गदूतों का दल - दल एक सैन्य शब्द है जिसका अर्थ सेना से है। स्वर्गदूत परमेश्वर की स्वर्गीय सेना है और उनका ज़िक्र पुरे पवित्र शास्त्र में मिलता है। (यहोशू 5:14; 2 राजा 6:17; भजन संहिता 34:7; 103:21; 148:2)

- परमेश्वर की स्तुति - लगातार और कभी न बुझने वाली धारा है जो उसके स्वर्गदूतों से और स्वर्ग या परमेश्वर की उपस्थिति में हर एक जन से तथा उन सब के द्वारा है जो उसके प्रताप को देखते हैं, निकलती है। राजा दाऊद इसका एक अच्छा उदाहरण है जिसे हम भजन संहिता में और विशेषकर भजन संहिता 145-150 में देखते हैं।

- स्वर्गदूत इस महिमामय घटना के उद्देश्य और अदभुत आश्चर्यकर्मों को व्यक्त कर रहे हैं।
    - सबसे पहला और महत्वपूर्ण उद्देश्य "आकाश में परमेश्वर की महिमा" हो, क्योंकि मानवजाति के लिए अवर्णनीय, अनुग्रहित, बहुमूल्य, अनगिनत और असीमित, परमेश्वर के पुत्र का दान दिया गया।

    - और दूसरा उद्देश्य : पृथ्वी पर उन मनुष्यों में जिनसे वह प्रसन्न है शान्ति हो। यूनानी भाषा में 'शान्ति' शब्द में समृद्धि और उद्धार सम्मिलित होता है जिस प्रकार हम रोमियों 5:1 "अत: जब हम विश्वास से धर्मी ठहरे, तो अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ मेल रखें।" वह "शान्ति का राजकुमार" (यशायाह 9:6) है। परमेश्वर के राज्य में जीना, प्रभु और मनुष्यों के साथ शान्ति में जीना है।

    - मनुष्यों में जिनसे वह प्रसन्न है, कुछ अनुवाद में यह इस प्रकार से है : जिन पर उसकी कृपा होती है और निश्चय ही उन लोगों पर ही उसकी कृपा होती है जिनसे वह प्रसन्न होता है।

(15) जब स्वर्गदूत उनके पास से स्वर्ग को चले गए, तो गडरियों ने आपस में कहा, "आओ, हम बेतलेहेम जाकर यह बात जो हुई है, और जिसे प्रभु ने हमे बताया है, देखे।"

- जिन लोगों को प्रभु प्रकाशन देता है वे भी यही करते हैं - वे उसे यत्न से खोजते हैं।

(16) और **उन्होंने तुरंत जाकर** मरियम और यूसुफ को, और चरनी में उस बालक को पड़ा देखा। (17) इन्हें **देख कर** उन्होंने वह बात जो इस बालक के विषय में उनसे कही गई थी, प्रगट की,

- प्रभु को **पाने** और **देखने** के पश्चात, उन्हें **सब को बताना** आवश्यक था कि उन्होंने उद्धारकर्ता को देखा है तथा मसीहा उनके बीच में है। यह उन सब के लिए सच है जो प्रभु को ढूंढते और देखते हैं।

यूहन्ना 1:35-37 यूहन्ना अपने दो चेलो के साथ खड़े हुए था, (36) और उसने यीशु पर जो जा रहा था,दृष्टि करके कहा, **"देखो, यह परमेश्वर का मेम्ना है।"** (37) तब वे दोनों चेले उसकी यह सुनकर **यीशु के पीछे हो लिए।**

यूहन्ना 1:40-42 उन दोनों में से, जो यूहन्ना की बात सुन कर यीशु के पीछे हो लिए थे, एक शमौन पतरस का भाई अन्द्रियास था । (41) उसने पहले अपने सगे भाई शमौन से मिलकर उस से कहा, "हम को ख्रीस्त, अर्थात मसीह, मिल गया ।

यूहन्ना 1:45 फिलिप्पुस ने नतनएल से मिलकर उससे कहा, कि जिस का वर्णन मूसा ने व्यवस्था में और भविष्यद्वक्ताओं ने किया है, वह हम को मिल गया; वह यूसुफ का पुत्र यीशु नासरी है।

(18) और सब सुनने वालो ने उन बातों से जो गडरियों ने जो उनसे कही आश्चर्य किया।

- प्रत्येक जिसने भी मसीह के जन्म के विषय में **सुना** "आश्चर्य किया" या अपने मन में "इस पर सोच-विचार किया"।

- परन्तु उन सब को जिन्होंने उससे व्यक्तिगत रीति से भेंट की, जैसे चरवाहों ने, जिन्होंने "**सुनने**" और "**देखने**", के पश्चात विश्वास किया और बताया; उन्हें भी दूसरों को बताना आवश्यक है।

(20) और गडरिये जैसा उन से कहा गया था, वैसा ही सब सुनकर और देखकर परमेश्वर की **महिमा** और **स्तुति** करते हुए लौट गए ।

(19) परन्तु मरियम ये सब बाते अपने मन में रखकर सोचती रही।

- मरियम ने इसे और गहराई से लिया। वह अपने बालक के जन्म से बहुत आनन्द, उत्साह और आभार से भरी थी। और उसने यह **सब बातें अपने मन में रखीं**... अपने दिमाग में नहीं। यह सब उसके लिए बहुत **बहुमूल्य** था। वो जो उसको बताया गया था और जो हुआ, उन सब बातों पर उसने सोचा या विचारा।

काश हम मरियम के समान होते !

- **इसने कभी मरियम को छोड़ा नहीं** तथा आने वाले दिनों में जो कुछ हुआ उन बातों का मूल्यांकन सब के द्वारा होना था कि **मरियम ने अपने मन में** क्या **रखा** था। और उसने यीशु को कभी नहीं छोड़ा। वह उन चरवाहों के समान दूसरे कामों में वापस नहीं लौटी। वह सदैव यीशु के साथ थी, यहाँ तक कि मृत्यु तक भी ... जो वास्तव में एक आरम्भ था।

काश हम मरियम के समान होते !

- मरियम ने यह सब बातें मन में रखीं। हम सब के लिए यह आवश्यक है कि हम उन बातों का मूल्यांकन करें जो हम रखते है और जो हमारे लिए बहुत बहुमूल्य हैं। जो ऐसा करते हैं, वे प्रभु के द्वारा बहुतायत से इस्तेमाल होते हैं। दाऊद इसका उदाहरण है:

  मैंने तेरे वचन को अपने हृदय में रख छोड़ा है, कि तेरे विरूद्ध पाप न करूँ। (भजन 119:11)

- हमें यीशु की बहुमूल्यता को मन में रखने और विचार करने की आवश्यकता है ... जिस प्रकार पतरस कहता है: तुम विश्वास करने वालों के लिए वह तो बहुमूल्य है। 1 पतरस 2:7

ज्योतिष्यों का आना

मत्ती 2:1-15 हेरोदेस राजा के दिनों में जब यहूदिया के बैतलहम में यीशु का जन्म हुआ, तो पूर्व से कई **ज्योतिषी** यरूशलेम में आकर पूछने लगे, (2) "यहूदियों का राजा जिसका जन्म हुआ है, कहा है? क्योकि हमने पूर्व में उसका तारा देखा है और उसको प्रणाम करने आए है।"

- ज्योतिष्यों का मतलब, ज्ञानी जन या जिसने ज्योतिष ज्ञान, स्वप्न का अर्थ बताने की विद्या, तथा दूसरे गुप्त कलाओं में ज्ञान प्राप्त किया है।
- पूर्व से आना : **फारस** से - ज्योतिष शास्त्र इस क्षेत्र में व्याप्त थी और राजसी जन्म समय के इसका प्रयोग किया जाता था। **बेबीलोन** भी खगोल शास्त्र और ज्योतिष शास्त्र में आगे था। यहूदियों का एक बड़ा समूह वहाँ रह गया था, इसलिए संभव है कि ज्योतिषियों ने यहूदियों की मसीहा के आने की आशा के विषय में ज्ञान प्राप्त किया होगा। दानिएल ने बेबीलोन के शाही दरबार में ज्योतिषियों का भी ज़िक्र किया था।

क्योकि हमने पूर्व में उसका तारा देखा है और उसको प्रणाम करने आए है।

- यह निश्चित नहीं है कि यह तारा आखिर क्या था। यह ग्रहों का एक साथ आना भी हो सकता था। ज्योतिषी ग्रहों का ध्यान रखते थे। यह कहा जाता है कि 7 - 6 ई.पू. बृहस्पति, शनि और मंगल एक साथ आए थे, और इस का ज़िक्र उस समय के प्राचीन लेखों में भी है। पारसी ज्योतिष शास्त्री बृहस्पति को संसार के शासक के साथ जोड़ते हैं। सीरिया-फिलीस्तीनी क्षेत्र में शनि को अमोरियों का तारा कहा जाता है। यह अन्त के दिनों में इस दुनिया के शासक की ओर संकेत करता है। हमें पर्याप्त ज्ञान नहीं है कि वास्तव में बैतलहम का यह तारा क्या था।

बालम जो एक भटका हुआ नबी था, अपनी भविष्यवाणी में तारे का उल्लेख करता है :

"मैं उसे देखता तो हूँ, किन्तु अभी नहीं, मैं उस पर दृष्टि पात तो करता हूँ, किन्तु निकट से नहीं। याकूब में से एक तारा उदित होगा, और इस्राएल में से एक राजदण्ड उठेगा। गिनती 24:17

(3) यह सुनकर हेरोदेस राजा और उसके साथ सारा यरूशलेम घबरा गया ।

- हेरोदेस इसलिए घबरा गया क्योंकि उसे अपने सिंहासन के लिए यह जन्मा बालक खतरे के रूप में नज़र आया। लोग इसलिए घबरा गए क्योंकि उन्होंने अपने पागल राजा को देखा था कि उसने सिंहासन बचाने के लिए क्या क्या किया था। जब उसे यह आशंका हुई कि उसके पुत्र राजा बनने की ताक में हैं, तो उसने दोनो का गला घोंट कर मार डाला, यह यीशु के जन्म से एक वर्ष पहले की बात है। और तीसरे को 4 ई.पू. हेरोदेस की मृत्यु से पांच दिन पहले मार डाला था।

(4) तब उसने लोगो के सब प्रधान याजकों और शास्त्रियों को इकठा करके उनसे पूछा, " मसीह का जन्म कहाँ होना चाहिए?" (5) उन्होंने उससे कहा, "यहूदियों के बैतलहम में, क्योकि भविष्यद्वक्ता के द्वारा यो लिखा गया है : (6) "हे बेतलेहेम, तू जो यहूदा के देश में है, तू किसी भी रीति से यहूदा के अधिकारियो में सबसे छोटा नही ; क्योकि तुझ में से एक अधिपति निकलेगा, जो मेरा प्रजा इस्राएल की रखवाली करेगा।" (मीका 5:2)

- ज्योतिषी "यहूदियों के राजा को जिसका जन्म हुआ है" ढूँढते हुए आए (2:1), तब हेरोदेस ने शास्त्रियों से पूछा मसीह का जन्म कहा होना चाहिए (2:4) वह तुरन्त समझ गया कि जिस बालक को वे ढूँढ रहे हैं वो साधारण राजा नही, परन्तु स्वयं मसीहा है।

- हेरोदेस दाऊद का वंशज नहीं था, वह एक एदोमी राजकीय परिवार का था, जिसमें रोमी शासकों को लोगों को सम्भालने की योग्यता दिखाई दी। उसे पहले गलील प्रदेश का राज्यपाल नियुक्त किया था (47 ई.पू.) और फिर (37 ई.पू.) यहूदियों का राजा। वह जानता था कि यदि दाऊद का वंशज उठेगा, तो उसका राज समाप्त हो जाएगा। बालक का नाश करना चाहिए।

(7) तब हेरोदेस ने चुपके से बुलाकर उनसे पूछा कि तारा ठीक किस समय दिखाई दिया था, (8) और उसने यह कहकर उन्हें बैतलहम भेजा, "जाओ, उस बालक के विषय में ठीक - ठाक मालूम करो, और जब वह मिल जाए तो मुझे समाचार दो ताकि मै भी आकर उस को प्रणाम करूं।"

- अब हेरोदेस ने चाहा की ज्योतिषी उसकी गुप्तचरी का काम करें: "जब वह मिल जाए तो मुझे समाचार दो"। उसने नवजात मसीहा को दण्डवत करने की इच्छा ज़ाहिर की परन्तु उसका असली उद्देश्य उसको मार डालना था।

(9) वे राजा की बात सुनकर चले गए, और जो तारा उन्होंने पूर्व में देखा था वह उनके आगे चला; और जहां बालक था, उस जगह के उपर ठहर गया। (10) उस तारे को देख कर वे अति आनन्दित हुए।

- ऐसा प्रतीत होता है कि उन्होंने तारा "उदय होते" या "पूर्व में" देखा और उसका पीछा करते यरूशलेम तक, उस नवजात यहूदियों के राजा की खोज करते हुए आए। परन्तु अब वह तारा जो थोड़े समय के लिए ओझल हो गया था, अब दुबारा प्रकट हुआ और "उनके आगे-आगे चला"।

(11) उस घर में पहुचकर उस बालक को उसकी माता मरियम के साथ देखा, और मुँह के बल गिरकर बालक को प्रणाम किया, और अपना -अपना थैला खोलकर उसको सोना, और लोबान, और गन्धरस की भेंट चढ़ाई।

- सच्ची आराधना इस तरह से जानी जा सकती है कि आप किस हद तक अपने आपको दीन करते हैं और अपनी वो वस्तुएँ अर्पित करते हैं जो आपको सबसे अधिक बहुमूल्य हैं।
    - सोना सबसे कीमती और बहुमूल्य धातु माना जाता है।
    - लोबान को तीन जड़ी-बूटियों से बनाया जाता है जो दक्षिण अरब, भारत और अन्य जगहों पर मिलते हैं।
    - गन्धरस, एक कीमती सुगन्धित द्रव्य है और इसका प्रयोग पवित्र अभिषेक के लिए किया जाता था। (निर्गमन 30:23)
    - यह भेंट संभवत: परिवार की ज़रूरत के लिए उस समय बेच दी थी जब उन्होंने हेरोदेस के क्रोध से बचने के लिए तीन वर्ष मिस्र में आश्रय लिया था।

(12) तब स्वप्न में यह चेतावनी पाकर कि हेरोदेस के पास फिर न जाना, वे दूसरे मार्ग से अपने देश को चले गए।

- इस कार्य ने संभवत: परिवार को बच निकलने के लिए एक-दो दिन का समय दे दिया था।
- जैसे ही हेरोदेस को पता चला कि ज्योतिष्यों ने मेरे साथ चाल चली है तो उसने क्रोधित हो कर बैतलहम में दो वर्ष से कम उम्र के बच्चों को मरवा डालने की आज्ञा दे दी। मसीहा के लिए सबसे पहले शहीद।

मिस्र में भाग जाना

(13) उनके चले जाने के बाद प्रभु के एक दूत ने स्वप्न में यूसुफ को दिखाई देकर कहा, "उठ, उस बालक को और उसकी माता को लेकर मिस्र देश को भाग जा; और जब तक मै तुझे न कहूँ, तब तक वही रहना; क्योकि हेरोदेस इस बालक को ढूढने पर है कि मरवा डाले।" (14) तब वह रात ही को उठ कर बालक और उसकी माता को लेकर मिस्र को चल दिया, (15) और हेरोदेस के मरने तक वही रहा। इसलिए कि वह वचन जो प्रभु ने भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहा था पूरा हो; " **मैंने अपने पुत्र को मिस्र से बुलाया।"**

800 वर्ष पहले लिखे गए होशे 11:1 में है : जब इस्राएल बालक था, तब मै ने उस से प्रेम किया, और अपने पुत्र को मिस्र से बुलाया।

और अब, क्योंकि वह तुमसे प्रेम करता है, वह आपको बुला रहा है कि आप मिस्र में से बाहर आएं और उसके पीछे चलें ... ताकि आप का परमेश्वर के पुत्र के रूप में नया जन्म हो।

परमेश्वर का, उसके उस **दान** के लिए **जो वर्णन से बाहर है**, धन्यवाद हो! २ कुरिन्थियों ९:१५

क्योकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलोता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नष्ट न हो,परन्तु अनन्त जीवन पाए। यूहन्ना ३:१६

परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह का दान और देना लगातार जारी है।

जितनों ने उसे ग्रहण किया, उसने उन्हें परमेश्वर की सन्तान होने का अधिकार दिया। यूहन्ना 1:12

क्योकि हर एक अच्छा वरदान और हर एक **उतम दान ऊपर ही से आता है**। याकूब 1:17

उसके पुत्र का दान - पवित्र आत्मा का दान - आत्मा का दान - अनुग्रह, दया, क्षमा, शान्ति ... का दान - अपनी हर एक सांस और अपने हृदय की हर एक धड़कन का दान - वह सब जो हमारे पास है - जो कुछ भी हम हैं - हमारे स्वर्गीय पिता की ओर से हमारे लिए दान हैं।

हम सब को आज्ञा दी गई है कि हम अपने स्वर्गीय पिता और प्रभु यीशु मसीह के अनुग्रह और वरदानों के देने वाले हों ।

यीशु ने कहा है : "लेने से देना धन्य है।" प्रेरितों के काम 20:35

दिया करो, तो तुम्हें भी दिया जाएगा। लोग पूरा नाप दबा दबाकर और हिला हिलाकर और उभरता हुआ तुम्हारी गोद में डालेंगे, क्योंकि जिस नाप से तुम नापते हो, उसी से तुम्हारे लिए भी नापा जाएगा।" लूका 6:38

यही क्रिसमस है। यही जीवन है।

उसका वर्णन से बाहर दान